धर्मों की नहीं कर्मों की लड़ाई लड़नी है – फारुख अब्दुल्ला

शांतिवन। हमारा पड़ोसी देश भले ही कितने वार करे लेकिन कश्मीर भारत से अलग नहीं हो सकता। आतंकवाद के बैनर तले नित नई मुसीबतें खड़ी करने की कोशिशें की जा रही हैं लेकिन हम आतंकवाद को जड़ से उखाड़ फेकेंगे। वह दिन दूर नहीं जब आतंकवाद इस दुनिया से खत्म हो जाएगा। उक्त विचार दादी जानकी के जन्मशताब्दी महोत्सव में जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री फारुख अब्दुल्ला ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि मैं पिछले 35 वर्षों से इस संस्था से न केवल वाकिफ हूँ बल्कि इसकी सेवाओं का भी कायल हूँ। भगवान मंदिरों में और खुद मस्जिद में भले ही न दिखाई दे, वह इंसान के दिल में ज़रूर बसता है, और इंसानों की सेवा करके ब्रह्माकुमारीज़ परमात्मा की सेवा कर रही है। इस संस्था ने देश-दुनिया में इंसानों का दर्द बांटा है। एक दिन ऐसा आएगा कि जब हर कोई इस संस्था की उपयोगिता और उपलब्धियों के प्रति नतमस्तक होगा।

महिला आरक्षण बिल लागू करने में देरी की अपरोक्ष रूप से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा

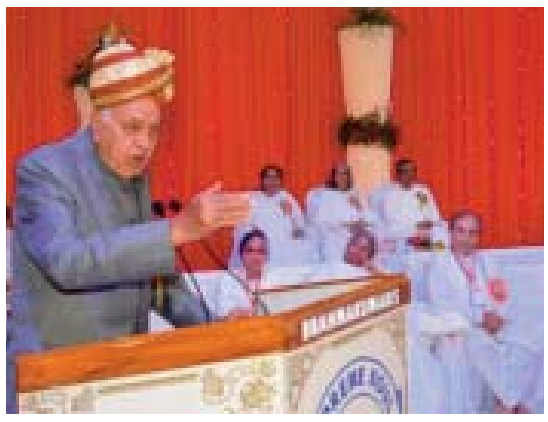

कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए फारुख अब्दुल्ला।

कि राजनेता प्रायः कहते हैं कि महिलाओं को उनके अधिकार मिलने चाहिए लेकिन जब अधिकार देने का अवसर आता है तो हाथ पीछे खींच लेते हैं। इन परिस्थितियों में भी ब्रह्माकुमारीज़ ने महिलाओं को मज़बूत आधार उपलब्ध कराया है। धर्म के नाम पर मतभेदों व नफरत की चर्चा करते हुए अब्दुल्ला ने कहा कि हमें धर्मों की लड़ाई नहीं बल्कि कर्मों की लड़ाई लड़नी है। भगवान के सामने उसी तरह हम एक समान हैं जिस तरह डॉक्टर के सामने मरीज। जब किसी मरीज का जीवन बचाने के लिए खून की ज़रूरत पड़ती है तो कोई यह नहीं पूछता कि खून हिन्दु का है या मुसलमान का। अस्पताल से बाहर निकलते ही सबको अपना-अपना धर्म याद आ जाता है। उन्होंने कहा कि दादी जानकी जैसी महान विभूतियों के आदर्श अपनाते हुए हम परमात्मा से दुआ करें कि वह हमें सच्चा इंसान बनाएं। हमें सही रास्ते पर चलकर भारत का नाम संसार में सूर्य की तरह चमकाना है।

पिछड़ी जाति आयोग के अध्यक्ष जस्टिस वी.ईश्वरैय्या, श्री जयसुंदरम मिल्स के प्रबंध निदेशक कोठाई दिनाकरण के अलावा रूस से आयीं ब्र.कु. संतोष, सनफ्रांन्सिसको से आयीं ब्र.कु. चंद्रू, नेपाल की ब्र.कु. राज, पंजाब ज़ोन प्रभारी ब्र.कु. अमीरचंद, ओ.आर.सी. गुड़गांव की ब्र.कु. आशा, कोलकाता की ब्र.कु. कानन आदि ने दादी जानकी व दादी हृदयमोहिनी के सानिध्य में प्राप्त अनुभव सांझा किए।

समारोह में नेपाल, रूस व भारत के सिकंदराबाद क्षेत्र से आए कलाकारों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किए।

शांतिवन। दादी के शताब्दी महोत्सव में शरीक होने के पश्चात् दादियों से मुलाकात करते हुए फिल्म अभिनेत्री वर्षा उसगावकर।

शांतिवन। दादी जानकी व दादी हृदयमोहिनी के साथ मुलाकात के दौरान ज्ञानचर्चा करते हुए प्रसिद्ध गायक अभिजीत भट्टाचार्य, उनकी धर्मपत्नी व ब्र.कु. दिव्यप्रभा।

शांतिवन। राजयोगिनी दादी जानकी को उनके 100वें जन्मदिवस के समारोह में 100 अलग-अलग फूलों से बनाया हुआ हार पहनाते हुए ब्र.कु. सुनंदा, ब्र.कु. दीपक हरके, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. नंदकिशोर व डॉ. सतीश देसाई।

फिलीपींस। फिलीपिनो कार्डिनल लूईस टैगल व अन्य मेहमानों को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. रजनी।

फरीदाबाद। राजनीतिज्ञों के लिए 'स्ट्रेस प्रिवेंशन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सीपीएस सीमा त्रिखा, विधायक विपुल गोयल, विधायक नगेन्द्र भड़ाना, वरिष्ठ भाजपा नेता राजेश नागर, ब्र.कु. बृजमोहन व ब्र.कु. ऊषा।

फर्रुखाबाद-उ.प्र.। दादी जानकी के 100वें जन्मदिवस पर केक काटकर जन्मदिन मनाते हुए श्री रसिक पीठाधीश्वर जी महाराज,महामण्डलेश्वर, श्री नागाराम लखनदास जी महाराज, योगेश्वरानन्द जी महाराज, पप्पन मिया जी, सदाकत हुसैन जी सेथली,इमाम, ब्र.कु. मंजु, ब्र.कु.सुरेश गोयल, श्रीमती मिथलेश अग्रवाल,कायमगंज प्रदेश अध्यक्ष,भाजपा महिला प्रकोष्ठ, डॉ. अनीता सूद व अन्य।

रक्तचाप की दवा: एक अद्भुत बूटी

स्वास्थ्य

जटामासी का उपयोग निद्रा लाने वाली तथा हृदय को तात्कालिक बदलने वाली एक अच्छी औषधि के रूप में किया जाता है। आयुर्वेद में जटामासी का प्रयोग अत्यन्त प्राचीन काल से किया जाता है। बढ़े हुए रक्तचाप को घटाने में तथा हृदय को स्थायी बल देने में इसका प्रभाव अद्भुत है। यह शरीर के अंगों में उठने वाले आक्षेपों को दूर करती है तथा स्नायुविक दौर्बल्य की अवस्था में शक्तिवर्द्धक के रूप में काम करती है।

यूरोप के सबसे प्राचीन ग्रन्थ हिप्पोक्रेट के औषधि विज्ञान (फार्मकोपिया) में भी इसका उल्लेख है। इसका ज्ञान सर्पगन्धा से भी पहले लोगों को हुआ, ऐसा कहा जाता है। मे.जे. बॉवर द्वारा प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थों में इस सुगंधित बूटी का उल्लेख है। यह हस्तलिखित ग्रन्थ वास्तव में अत्यन्त प्राचीन है। खोतान (पूर्वी पाकिस्तान) के कच्चा नामक स्थान में प्रवास करते समय मेजर जनरल एच बॉवर को वहाँ के एक निवासी ने उपहार के रूप में यह बहुमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ दिया था, जो अब तक पृथ्वी के नीचे गड़ा पड़ा था। मेजर जनरल बॉवर ने अपनी ओर से उसे बंगाल की `रॉयल एशियाटिक सोसायटी' के तत्कालीन सभापति को भेंट कर दिया। डॉ. हार्नल कुछ वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद उस हस्तलिखित ग्रन्थ को पढ़ने में सफल हुए। पीछे वह पुस्तकाकार में प्रकाशित हुआ।

कहा जाता है कि कच्चा के पास किसी मठ में साधुओं के द्वारा समय-समय पर यह हस्तलिखित ग्रन्थ लिपिबद्ध हुआ था। उसमें औषधि - गुण सम्पन्न बूटियों का पासे द्वारा भविष्य कथन की विधि, मंत्रों के द्वारा सर्पदंश की चिकित्सा आद विषयों का वर्णन है।

आयुर्वेद के अनुसार जटामासी के गुण – यह रोधक, कटु और स्वाद में मीठी होती है। यह वात, पित्त और कफ- इन तीनों का शमन करने वाली है। शरीर की जल को शान्त करती है तथा कुष्ठ, रक्त में विष-प्रवेश एवं विसर्प को अच्छा करती है। त्वचा पर चन्दन

की तरह लगाने पर उसको कोमल बनाती है, ज्वर का नाश करती है तथा ऊपरी चर्मरोग को दूर करती है।

यह सदाबहार बूटी है। इसका पृथ्वी के नीचे रहने वाला अंश ही औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है। वह अंगुली जितना मोटा और भूरे रंग का होता है। वह सर्वत्र छोटे-छोटे रोमूपी मूलों से भरा रहता है। इसमें से एक मन्द-मधुर सुगन्ध निकलती है। हिमालय प्रदेश में यह प्रचुरता से उत्पन्न होती है। पश्चिम बंगाल के गंगा तटवर्ती स्थलों में भी यह प्राप्त होती है। संस्कृत में इसे जटामासी, भूतजटा, जटिला तथा तपस्वी कहते हैं।

इसको चूर्ण रूप में 1 अथवा 2 चायवाले चम्मच की मात्रा में दे सकते हैं या काढ़े के रूप में शहद के साथ दे सकते हैं। काढ़ा बनाने के लिए थोड़ा-सा (गिनती में 3-4) लेकर किसी मिट्टी के बर्तन में एक गिलास पानी के साथ तब तक उबालना चाहिए जब तक पानी जलकर आधा न रह जाये।

सामर्थ्य से अधिक श्रम करने के कारण जिनको अच्छी या पूरी नींद नहीं आती, चक्कर आते हैं, स्नायविक दुर्बलता अनुभव होती है, उनको फिर से शक्ति देने में यह एक आदर्श औषधि है। आधे से एक तक चाय की चम्मच भर जटामासी का मधु या मिश्री के घोल के साथ सेवन रक्तचाप को ठीक करके अभीष्ट सामान्य स्तर पर बनाये रखने में बड़ा उत्तम कार्य करता है। इसके प्रयोग से हृदय रोग में भी अच्छा लाभ होता है। श्वेत कूष्माण्ड, शतमूली अथवा ब्राह्मी के रस के साथ जटामासी का सेवन उन्माद रोग में अच्छा प्रभाव दिखाता है। जटामासी निश्चय ही अच्छी नींद लाने वाली औषधि है। जटामासी का बालों पर भी आश्चर्यजनक प्रभाव होता है।

लो ब्लडप्रेशर के घरेलू उपाय

– 50 ग्राम देशी चने व 10 ग्राम किशमिश को रात में 100 ग्राम पानी में किसी काँच के बर्तन में रख दें। सुबह चनों को किशमिश के साथ अच्छी तरह से चबा-चबाकर खाएँ और पानी को पी लें। यदि देशी चने न मिल पायें तो सिर्फ किशमिश ही लें। इस विधि से कुछ ही सप्ताह में ब्लडप्रेशर - शेष पेज 4 पर